Socialism) ...

अथवा, कार्ल मार्क्स को वैज्ञानिक समाजवाद का जनक (Karl Marx as the Father of Scientific Socialism) क्यों माना जाता है ?

उत्तर—वेपर का मत है कि, "मार्क्स की गणना विश्व के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनैतिक दार्शनिकों में होनी चाहिए। उसने विश्व को न केवल एक नवीन क्रांतिकारी विचारधारा की बल्कि उस विचारधारा के द्वारा विश्व के इतिहास की दिशा तक बदल दी। आधुनिक राजनीतिक चिन्तन के क्षितिज पर मार्क्स को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। वह आधुनिक राजनीतिक चिन्तन का जनक था। मार्क्स मौलिक विचारों का प्रतिपादक था। आज विश्व का कोई भी देश ऐसा नहीं है जो कि मार्क्स के विचारों से प्रभावित न हो। आधुनिक साम्यवादियो के लिए मार्क्स खुदा है, उसके वाक्य ईसा के दस कमान्डमेंट हैं। 'दास कैपिटल' का महत्व किसी धार्मिक ग्रंथ से कम नहीं है। मार्क्स के विचारों के विरुद्ध सोचना कुफ्र है। शायद ही किसी राजनीतिक चिन्तक को इतना सम्मान, इतनी श्रद्धा तथा अन्धभक्ति उम्माद के कारण नहीं अपितु उसके विचारों के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई है।

मार्क्सवाद का आशय एवं परिभाषा—कार्ल मार्क्स ने जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया और लेनिन, स्टालिन तथा माओ आदि ने जिन सिद्धांतों को आगे बढ़ाया, उन सिद्धांतों तथा विचारों को सामूहिक रूप से मार्क्सवादी कहा जाता है। मार्क्सवाद को 'वैज्ञानिक समाजवाद' के नाम से भी जाना जाता है।

कार्ल मार्क्स ने ही सर्वप्रथम अपने दर्शन में अपने मनोवांछित आदर्शों का केवल चित्रण ही नहीं किया, बल्कि समाज का विकास किन कारणों से होता है, विकास की प्रक्रिया क्या होती है, विकास की दिशा तथा उसकी चरमस्थिति क्या होगी—इस प्रकार के प्रश्नों की व्याख्या करने वाले सिद्धांतों का भी निरूपण किया। कहने का आशय है कि उन्होंने

समाजवाद का पूर्णतया वैज्ञानिक विश्लेषण किया। यही कारण है कि उनके विचारों तथा 'सिद्धांतों को वैज्ञानिक समाजवाद' तथा मार्क्स को 'वैज्ञानिक समाजवाद' का जनक कहा जाता है।

कार्ल मार्क्स को वैज्ञानिक समाजवाद का जनक मानने के कारण—वैसे इस सम्बन्ध में प्रमुख तर्क निम्नानुसार दिऐ जा सकते हैं—

1. मार्क्स का राजनीतिक दर्शन राजनीतिज्ञों तथा श्रमिकों के लिए प्रेरणास्रोत—मार्क्स ने जिन राजनीतिक दर्शन का सृजन किया उसमें श्रमिक वर्ग का पूर्णतया समर्थन किया गया था। इसमें पूँजीवाद से समझौते की कोई गुंजाइश नहीं थी। मार्क्स ने वैज्ञानिक राजनीतिक दर्शन का प्रतिपादन किया। 'इतिहास की आर्थिक व्याख्या' द्वारा मार्क्स ने पूँजीवादी अन्याय तथा अमानवीयता का पर्दाफाश किया। वर्ग-संघर्ष के सिद्धांत द्वारा उसने मजदूरों में एकता और एक एक नवीन जोश को भर दिया। विश्व के विभिन्न देशों में श्रमिकों के जीवन स्तर को उठाने के प्रयास किए जा रहे हैं उनके लिए मार्क्स के विचार महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। पूँजीपति इस भय से कि कहीं मार्क्स की भविष्यवाणियाँ सत्य न हो जाएँ और उन्हें दुर्दशा का सामना न करना पड़े, श्रमिकों के उत्थान एवं उन्हें सन्तुष्ट करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हैं।

आर्थिक कारकों पर विशेष महत्व देकर मार्क्स ने समाजशास्त्र की महान् सेवा की है। उसने द्वन्द्वात्मक सिद्धांत के आधार पर यह सिद्ध कर दिया कि पूँजीवाद का विनाश अवश्यम्भावी है और इसके पश्चात् एक राज्यविहीन तथा वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी। मार्क्स की भविष्यवाणियाँ चाहे सत्य सिद्ध न हुई हो परन्तु आज विश्व का कम से कम आधार भाग मार्क्स की भविष्यवाणियों के सत्य होने की आशाएँ लगाए हुए हैं।

2. जनसाधारण के लिए आकर्षक—मार्क्स के राजनीतिक दर्शन में जनसाधारण के लिए विशेष आकर्षण है। उसने शोषित और दलित श्रमिक वर्ग मे नवीन आशाओं का संचार किया। उसने मस्तिष्क में यह विचार कूट-कूट भर दिए कि उन्हें समानता तथा स्वतंत्रता के अधिकार केवल पूँजीवादी व्यवस्था के विनाश तथा साम्यवादी समाज की स्थापना के पश्चात् ही प्राप्त हो सकती है।

3. पूँजीवादी व्यवस्था के भावी स्वरूप का सही अनुमान—मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था के भविष्य का जो अनुमान लगाया है वह अन्य विचारकों की अपेक्षा सत्य के अधिक निकट है। उसका यह भविष्यवाणी सत्य निकली है कि पूँजीवाद का जो वर्तमान स्वरूप है वह भविष्य में नहीं रहेगा। पूँजीवाद समूल नष्ट तो नहीं हुआ परन्तु उसके स्वरूप में परिवर्तन अवश्य ही हो गया है। वर्तमान लोककल्याणकारी राज्य में श्रमिकों के हितों के संरक्षण का विशेष ध्यान रखा जाता है। अतः पूँजीवाद द्वारा अब श्रमिक वर्ग का शोषण किया जाना संभव नहीं है।

4. पूँजीवादी व्यवस्था का पर्दाफाश—मार्क्स ने पूँजीवादी राजनीतिक व्यवस्था के दोषों से विश्व को अवगत कराया। उसने विश्व के शक्तिशाली पूँजीपतियों को कटघरे में लाकर खड़ा कर दिया। मार्क्स ने इस रहस्य का उद्घाटन किया कि वर्तमान पूँजीवादी राज्य कर वसूल करके सेना तथा शासकीय कर्मचारियों का प्रयोग करके पूँजीपतियों के हितों का संरक्षण करता है जो कि वास्तव में दया नहीं दण्ड के पात्र हैं। मार्क्स के इन विचारों ने जहाँ पूँजीपतियों को उसका शत्रु बना दिया वहीं श्रमिक वर्ग में वह मसीहा के रूप में विख्यात हो गया।

5. श्रमिकों का महान् नेता—मार्क्स को श्रमिक वर्ग के वीर नायक के रूप में अलंकृत किया गया है। उसने दलित, शोषित तथा अन्याय से पीडित शोषत वर्ग में नवीन आशाओं

का संचार किया। उन्हें एकता के सूत्र में बाँधकर अन्याय से लड़ने की असीम शक्ति प्रदान की. उसने घोषणा की कि "विश्व के श्रमिकों! एक हो जाओ, अन्तिम विजय तुम्हारी ही होगी।" उसके विचारों में पूँजीपतियों के विरुद्ध क्रोद्धाग्नि प्रस्फुटित होती थी। उसके विचारों में ओजस्विता थी। उसके विचार क्रांतिकारी तथा विचारधारा ज्वालामुखी के समान थी।

6. वैज्ञानिक विचारधारा—मार्क्स के विचारों को राजनीतिक चिन्तन के क्षेत्र में जो विशेष महत्व प्राप्त हुआ उसका कारण उसकी विचारधारा में वैज्ञानिकता का समावेश है। मार्क्स ने समाज एवं राजनीति को प्रभावित करने वाले वैज्ञानिक नियमों की खोज करके राजनीतिक चिन्तन की महान् सेवा की है। **वेपर** के शब्दों में, "मार्क्स ने वैज्ञानिक नियमों के आधार पर राजनीतिक दलों के कार्यक्रम का सिद्धांत और सामाजिक विकास के निश्चित क्रम का दार्शनिक सिद्धांत प्रतिपादित किया। उसके प्रभाव एवं सफलता का रहस्य यही था कि उसने अपने सिद्धांतों का निर्माण वैज्ञानिक आधार पर किया।"

7. वैज्ञानिक समाजवाद का प्रवक्ता—मार्क्स के पूर्ववर्ती समाजवादी विचारकों का चिन्तन अधिकांशतः स्वप्नलोकीय था। किसी भी विचारक ने समाजवादी समाज की स्थापना के लिए कोई निश्चित कार्यक्रम नहीं दिया था। मार्क्स सर्वप्रथम विचारक था जिसने समाजवाद के सिद्धांतों तथा स्वरूप का ऐतिहासिक, तार्किक तथा दार्शनिक विवेचन करके उसकी स्थापना के लिए निश्चित कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उसने भावी समाज की रूपरेखा का साँगोपांग चित्र प्रस्तुत किया। इस दृष्टि से मार्क्स का राजनीतिक दर्शन समाजवाद की वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। इसीलिए मार्क्स को वैज्ञानिक समाजवाद का जन्मदाता कहा जाता है।

8. वर्ग संघर्ष का सिद्धांत—मार्क्स ने वर्ग संघर्ष के सिद्धांत का प्रतिपादन करके श्रमिकों को पूँजीपतियों के शोषण एवं अत्याचार से तो मुक्त किया ही इसके साथ ही उसने उनके सामने आर्थिक तथा राजनीतिक समानता के लक्ष्य हो रखा। मार्क्स ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। उसने श्रमिकों को पूँजीपतियों के विरुद्ध क्रांति रूपी अस्त्र का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। **मैक्सी** के शब्दों में, "मार्क्स वर्ग संघर्ष को गौरवान्वित किया है। उसने इसे न केवल पूँजीवादी के अत्याचारों की समाप्ति के लिए अपितु सामाजिक विकास की योजना में सर्वहारा वर्ग के लिए निर्धारित किए गये व्यक्तियों को स्वतंत्रता प्रदान करने में महान् कार्यों को पूर्ण करने के लिए आवश्यक बतलाया है।"

9. शोषित वर्ग का मसीहा—मार्क्स का हृदय दलित और शोषित वर्ग के लिए द्रवित हो उठता था। उसके मन में श्रमिकों के प्रति सहानुभूति थी। वह उनके लिए केवल कोरी सहानुभूति प्रदर्शित करके ही सन्तुष्ट नहीं हुआ अपितु उनके लिए कुछ कर गुजरने की लालसा उसमें थी। मार्क्स ने पूँजीवादी व्यवस्था के विशाल भवन को धाराशायी करके उसके भग्नावेशेषों पर साम्यवाद का भव्य प्रासाद खड़ा करने का प्रयास किया। अपने इस प्रयास में उसे बहुत अधिक सफलता प्राप्त हुई।

10. नवीन युग तथा धर्म का प्रवर्तक—मार्क्स को नवयुग तथा नवीन धर्म का प्रवर्तक माना जाता है। मार्क्सवाद ने करोड़ों शोषित और पीड़ितों को धर्म के समान प्रभावित किया है। उसके सिद्धांत उसके अनुयायियों के लिए ईश्वरीय वाणी के समान हैं। साम्यवाद के लिए इतनी अगाध श्रद्धा उनके मन में है कि उसके लिए वे किसी भी प्रकार का बलिदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। **वेपर** के अनुसार, "साम्यवादियों के लिए मार्क्स नवीन धर्म का पैगम्बर है।" मार्क्स यद्यपि धर्म को अफीम की गोली मानता है परन्तु प्रकारान्त से साम्यवाद भी उसके अनुयायियों के लिए एक प्रकार का धर्म ही है जिसमें दीक्षित होना धर्म की दीक्षा के समान ही है। **हरमान** का मत है, "मार्क्स के शब्दों में धर्म निर्धन व्यक्ति

की अफीम है तथापि स्वयं मार्क्सवाद की धर्म से अनुरूपता है और यही इसके प्रभाव का आंशिक कारण भी है।''

11. राजनीतिज्ञों पर सर्वाधिक प्रभावकारी दर्शन—मार्क्सवादी विचारधारा ने वर्तमान 'राजनीतिज्ञों' को सर्वाधिक प्रभावित किया है। प्रत्येक देश का राजनीतिज्ञ मार्क्स के दर्शन का अध्ययन करता है तथा तद्नुरूप श्रमिकों की दशा को सुधारना अपना प्राथमिक कर्त्तव्य समझता है। वेपर ने मार्क्स के प्रभाव को निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया है, ''मार्क्स के यूरोप और एशिया में लाखों व्यक्ति उसकी शिक्षा को सन्देश के रूप में स्वीकार करते हैं और उसे नवीन युग का ईश्वर मानते हैं।''

मार्क्स विभिन्न विद्वानों की नजर में—राजनीतिक चिन्तन के विभिन्न विद्वानों ने मार्क्स की प्रशस्ति अपनी लेखनी चलाई है—

वर्न्स के शब्दों में, ''विभिन्न साम्यवादी दल मार्क्स के उदाहरण देकर एक-दूसरे की आलोचना करते हैं क्योंकि लगभग सभी विवादास्पद विषयों का समर्थन करने के लिए उसके उद्धरण उपलब्ध हैं।''

क्रेन्ज मेहरिंग के अनुसार, ''मार्क्स के सैद्धांतिक प्रतिनिधि अनेक थे परन्तु व्यक्तिगत शत्रु शायद ही कोई हो। उसका नाम तथा कार्य शताब्दियों तक अमर रहेगा।''

वेपर का विचार है, ''अपने सन्देश की शक्ति, अपनी शिक्षाओं की प्रेरणा और भावी विकास पर अपने प्रभाव के कारण मार्क्स का स्थान विश्व के राजनीतिक चिन्तन के महान आचार्यों के किसी समूह में पूर्णतया सुरक्षित है।''

हो का मत है, ''यह बात निर्विवाद है कि मार्क्स 19वीं शताब्दी का अधिक प्रभावशाली व्यक्ति है।''

ऐबेन्स्टीन के शब्दों में, ''मार्क्स की पूँजीवादी व्यवस्था की व्याख्या ने इतिहास के निर्माण को इतिहास के लेखन की अपेक्षा कहीं अधिक प्रभावित किया है। किसी व्यक्ति द्वारा उसके आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा दार्शनिक विचारों को भले ही स्वीकार अस्वीकार किया जाय पर उसकी उपेक्षा करना संभव है।''

पुनश्च **मैक्सी** के शब्दों में, ''मार्क्स को करोड़ों व्यक्ति देवता के समान पूजते हैं करोड़ों व्यक्ति उसे राक्षस कहकर उसकी भर्त्सना करते हैं। इसी कारण मार्क्स की सही निष्पक्ष व्याख्या करना गुरुतर कार्य हो गया है; फिर भी उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती है। मार्क्स का अध्ययन तभी हो सकता है जबकि इन भावनाओं को निकाल कर फेंक दिया जाये।''